आखर हिंदी पत्रिका

An International Peer Reviewed Referred Online E-Journal

E- ISSN - 2583-0597; खंड 5/अंक 1/मार्च 2025

अनुक्रमणिका

संपादकीय — प्रो. प्रतिभा मुदलियार — 1-2

शोधालेख

- विकलांगता के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण — शबनम परवीन — 3-7
- भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य: ज्ञान परंपरा — डॉ.उमाकांत आनेप्पा बिरादार — 8-12
- हिन्दी व्यंग्य के पुरौधा: हरिशंकर परसाई — प्रो.एन.आर.साव — 13-16
- रीता सिन्हा की कहानियों में वक्त के साथ बदलते रिश्तों के रुख — केसरबेन राजपुरोहित — 17-22
- प्रवासी भारतीय स्त्री कल आज और कल- फीजी के संदर्भ में — डॉ. सुभाषिनी लता कुमार — 23-31
- शिवमूर्ति के कथा साहित्य में ग्रामीण आंचलिक की पृष्ठभूमि — प्रतिभा पाल, डॉ. शार्दूल विक्रम सिंह — 32-40

लेख

- पाँच अंक की महिमा — प्रो. प्रतिभा मुदलियार — 41-42
- आज की पीड़ी — रिहाना. एस — 43-45

कविताएं

- हिंदी की कहर — परवीन लता — 46-47
- मौन का मूल्य — प्रो. प्रतिभा मुदलियार — 48-49
- शांतिनिकेतन — प्रो. प्रतिभा मुदलियार — 50-51

****

This work is licensed under CC BY-NC 4.0